

झारखंड का गठन

19वीं सदी की शुरुआत से एक अलग राज्य के लिए आंदोलन 15 नवंबर, 2000 को झारखंड के गठन के साथ समाप्त हुआ। इस दिशा में विभिन्न समूह प्रयास इस प्रकार थे:

ढाका छात्र संघ

इसकी स्थापना 1910 में जे बार्थोलोम्यू और कुछ एंग्लिकन (अंग्रेजी) मिशनरियों द्वारा गरीब आदिवासी छात्रों की समस्याओं से निपटने के लिए की गई थी। इस संघ को बाद में फिर से संगठित किया गया और छोटा नागपुर इम्प्रूवमेंट सोसाइटी का नाम दिया गया और बाद में 1928 में छोटा नागपुर उन्नति समाज नाम दिया गया। इस सोसाइटी के संस्थापक जोएल लकड़ा, आनंद मसीह टोपनो, थेबले उरांव, पॉल दयाल, अल्फोंस कुजूर और बांदी उरांव थे।

1928 में इस सोसाइटी के एक सदस्य ने साइमन कमीशन से मुलाकात की और झारखंड क्षेत्र में एक अलग प्रांत के निर्माण की पहली मांग पेश की। 1928 में ईसाई छात्र संगठन 'छोटा नागपुर इम्प्रूवमेंट सोसाइटी' का नाम बदलकर छोटा नागपुर उन्नति समाज कर दिया गया। छोटा नागपुर उन्नति समाज ने अंग्रेजी, मुंडारी, हिंदी और कुरुख भाषाओं में आदिवासी नाम की एक पत्रिका प्रकाशित की।

किसान सभा

इसकी स्थापना 1931 में थेबले उरांव और पॉल दयाल ने की थी। यह सभा आदिवासी लोगों की समस्याओं के सुधार के आधार पर छोटा नागपुर उन्नति समाज से भिन्न थी। यह सरकार को कार्रवाई करने के लिए मजबूर करने के लिए कट्टरपंथी कार्रवाई, किसानों की लामबंदी में विश्वास करता था।

छोटा नागपुर कैथोलिक सभा

इसे छोटा नागपुर के आर्कबिशप के सहयोग से बनिफेस लकड़ा और इग्रेस बेक ने बनाया था। इसका उद्देश्य सामाजिक-धार्मिक और आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देना था। इस सभा ने 1937 के चुनाव लड़े और इग्रेस बेक और बेनिफेस लकड़ा दोनों निर्वाचित हुए। भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत राजनीतिक अर्थव्यवस्था के अनुदान और ओडिशा प्रांत के निर्माण ने झारखंड के एक अलग प्रांत के लिए संघर्ष करने के संकल्प को मजबूत किया।

आदिवासी महासभा

इसका गठन 1938 में हुआ था, 1939 में जयपाल सिंह आदिवासी महासभा के अध्यक्ष थे। उन्होंने छोटा नागपुर और संथाल परगना के कुछ हिस्सों सहित एक अलग राज्य की मांग की। 1940 में, कांग्रेस के रामगढ़ अधिवेशन में, उन्होंने सुभाष चंद्र बोस के साथ एक अलग राज्य, झारखंड बनाने की आवश्यकता पर चर्चा की।



झारखंड पार्टी (JKP)

- झारखंड पार्टी (JKP) की स्थापना 1949 में जस्टिन रिचर्ड ने की थी। बाद में, जयपाल सिंह मुंडा ने इसमें शामिल होकर अपने आदिवासी महाशव को इसमें मिला दिया। 1950 में यह एक पूर्ण राजनीतिक दल बन गया। जयपाल सिंह झारखंड पार्टी के अध्यक्ष चुने गए। जयपाल सिंह ने झारखंड में एक प्रांत के निर्माण का सुझाव दिया और सोचा कि यह आदिवासी लोगों की जीवन शैली के उत्थान का एकमात्र उपाय है।
- उस समय का प्रसिद्ध नारा था झारखंड अबुआ, डाकु डिकू सेनोआ यानी झारखंड हमारा है और सभी लुटेरों (डकू) और एलियंस (डिकू) को छोड़ना होगा। स्वतंत्रता के बाद के युग में झारखंड पार्टी ने पहले चुनाव में भाग लिया। झारखंड पार्टी के उम्मीदवारों ने 32 विधानसभा सीटों पर जीत हासिल की और इस पार्टी को इस क्षेत्र में प्रमुख राजनीतिक तत्व के रूप में स्थापित किया।
- 1955 में, राज्य पुनर्गठन आयोग (एसआरसी) को एक ज्ञापन प्रस्तुत किया गया था, जिसने एक नए राज्य के निर्माण की मांग के लिए सामाजिक-राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आधार पर जोर दिया था। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भाषाई, जातीय और सांस्कृतिक रूप से जनजातियां गैर-आदिवासी लोगों से अलग थीं, इस प्रकार, भौगोलिक निकटता और प्रशासनिक भिन्नता की आवश्यकता थी।
- वे एसआरसी (SRC) को समझाने में विफल रहे और इस आधार पर खारिज कर दिया गया कि आदिवासी भाषा की बहुलता झारखंड क्षेत्र में एक नए राज्य के निर्माण का मानदंड नहीं है। इस बीच, इस क्षेत्र में अन्य राष्ट्रीय दल भी सक्रिय हो गए, जैसे कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI), स्वतंत्र पार्टी और जनसंघ।
- 20 जून 1963 को JHP का कांग्रेस में विलय हो गया। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री बिनोदानंद झा ने कांग्रेस- JHP विलय में अहम भूमिका निभाई थी। विलय का लाभ यह हुआ कि झारखंड के लोगों को वास्तविक सरकारी कार्यालय और दिन-प्रतिदिन के प्रशासन से पहली बार अवगत कराया गया।
- ईसाई आदिवासी वर्ग ने विलय का विरोध उनके प्रभाव के लिए एक खतरे के रूप में किया। सहदेव समूह, पॉल दयाल समूह, लकड़ा समूह जैसे कई समूह उभरे।

तीन गुट

इसके अलावा, 1963 और 1968 के बीच तीन अलग-अलग गुट उभरे। ये थे बिरसा सेवा दल, क्रांतिकारी मोर्चा और छोटा नागपुर परिषद।

झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM)

JHP और झारखंड के अन्य राजनीतिक दलों की विफलता ने एक और आंदोलन को जन्म दिया। विनोद बिहारी महतो धनबाद और हजारीबाग क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण नेता के रूप में उभरे और शिवाजी समाज की स्थापना की। क्षेत्र की संथाल आबादी के साथ गठबंधन किया गया था। तब विनोद बिहारी महतो



और शिबू सोरेन के दोहरे नेतृत्व में 1973 में झारखंड मुक्ति मोर्चा पार्टी (झामुमो) का गठन किया गया था।

विनोद बिहारी महतो अध्यक्ष बने और शिबू सोरेन झामुमो के महासचिव चुने गए।

बिरसा सेवा दल

बिरसा सेवा दल (BSD) की स्थापना 1967 में ललित कुजूर ने की थी। मूसा गुरिया BSD के महासचिव थे।

- बिरसा सेवा दल की गतिविधियों को दो चरणों में विभाजित किया जा सकता है:
- प्रथम चरण (1967-69) - इस चरण में हिंसक साधनों की वकालत की गई।
- दूसरा चरण (1970) - इसकी शुरुआत तब हुई जब इसका चरमपंथी रुख विफल हो गया और वामपंथी दलों का प्रभाव कम हो गया।

झारखंड समन्वय समिति

यह 1987 में झामुमो (सोरेन), झामुमो (मरांडी) और कुछ छोटे संगठनों जैसे 62 सांस्कृतिक और राजनीतिक संगठनों द्वारा बनाया गया था।

- इसका उद्देश्य झारखंड के एक अलग प्रांत के सपने को साकार करना है।

ऑल झारखंड स्टेट्स यूनियन (AJSU)

इसकी स्थापना 22 जून 1986 को निर्मल महतो ने की थी। इसने 1989 में आम हड़तालें और लोकसभा चुनावों का बहिष्कार करने का अभियान चलाया।

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने 1990 में झारखंड मामलों (CoJM) पर एक समिति का गठन किया। AJSU ज्यादातर संथाल परगना क्षेत्र में सक्रिय है।

झारखंड क्षेत्र स्वायत्त परिषद

- यह अगस्त 1995 में बिहार सरकार द्वारा अस्तित्व में आया, तब लालू प्रसाद यादव मुख्यमंत्री थे। JAAC का चुनाव कभी नहीं हुआ था और इसे आवंटित शक्तियों का हस्तांतरण नहीं किया गया था।
- झामुमो और झारखंड की अन्य पार्टियों के पास एक अलग झारखंड राज्य का उद्देश्य था जिसमें चार राज्यों के 25 जिले शामिल थे।
- 1991 में, भाजपा ने दक्षिण बिहार के 16 जिलों से वनांचल नामक राज्य के निर्माण का प्रस्ताव रखा। 1996 के आम चुनावों के लिए कांग्रेस के घोषणापत्र में स्वायत्तता या राज्य के निर्माण के प्रति कांग्रेस का रवैया सतर्क और प्रतिबंधात्मक था।
- 22 जुलाई 1997 को बिहार विधानमंडल ने झारखंड को अलग राज्य बनाने का प्रस्ताव पारित कर केंद्र सरकार को भेजा।



- 1998 में, भाजपा ने केवल दक्षिण बिहार के 16 जिलों से वनांचल नामक राज्य के निर्माण का प्रस्ताव रखा। लेकिन 21 सितंबर 1998 को बिहार विधानमंडल ने बिहार राज्य पुनर्गठन विधेयक, 1998 को खारिज कर दिया। राबड़ी देवी उस समय बिहार राज्य की मुख्यमंत्री थीं।
- बाद में 1999 में, लोकसभा चुनावों में, भाजपा के नेतृत्व वाला राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) केंद्र में सत्ता में आया, क्योंकि भाजपा को झारखंड की 14 लोकसभा सीटों में से 11 सीटें मिली थीं। एक सीट राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के खाते में गई और दो सीटें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) के खाते में गईं।
- नतीजतन, NDA द्वारा 2 अगस्त, 2000 को लोकसभा से और 11 अगस्त, 2000 को राज्यसभा से बिहार राज्य पुनर्गठन विधेयक, 2000 को दरकिनार करते हुए एक अलग राज्य का वादा पूरा किया गया।
- 25 अगस्त, 2000 को तत्कालीन राष्ट्रपति के.आर. नारायण ने राज्य पुनर्गठन विधेयक, 2000 पर हस्ताक्षर किए। झारखंड 15 नवंबर, 2000 को भारत के 28वें राज्य के रूप में अस्तित्व में आया।

झारखंड के पहले मुख्यमंत्री बाबू लाल मरांडी बने और प्रभात कुमार झारखंड के पहले राज्यपाल नियुक्त किए गए। जनवरी 2002 को, झारखंड लोक सेवा आयोग राज्य में स्थापित हुआ और फटिक चंद्र हेम्ब्रम JPSC के पहले अध्यक्ष बने।

